साहित्यसुधा

साहित्यकारों की वेबपत्रिका

साहित्यकारों की रचना स्थली

वर्ष: 3, अंक 44, सितम्बर(प्रथम) , 2018

अलास्का के हुना लिंगिट (Tlingit) आदिवासी

नीरजा द्विवेदी

छब्बीस जुलाई, 2016 को हमारा शिप (जलपोत) प्रशांत महासागर में अलास्का के किनारे ग्लेशियर बे के समीप पहुँचा. बर्फ की श्वेत, धवल छटा ने हमारा मन मोह लिया. बादलों की सुरमई आभा से सुसज्जित ग्लेशियर बे के मार्जारी नामक ग्लेशियर की पंक्ति की अविस्मरणीय छवि देखकर हम सब मंत्रमुग्ध रह गये.

कुछ समय पूर्व हम लोगों को जलपोत की पांचवी मंज़िल पर एक आलीशान हाल में यहाँ की हुना लिंगिट आदिवासी की सँस्कृति के विषय में यहीं की बर्था फ्रैनुलोविच का प्रभावी भाषण सुनने को मिला था. उनके भाषण ने मेरे मन में उनके तथा उनकी सँस्कृति के विषय मे और अधिक जानकारी प्राप्त करने की उत्सुकता जागृत कर दी थी, अतः मैंने स्वागत कक्ष में बात करके बर्था फ्रैनुलोविच से संध्या चार बजे साक्षात्कार का समय ले लिया था.

संध्या चार बजे मैं बर्था जी से मिलने के लिये शिप के डेक नम्बर नौ पर पहुँची तो अपने समक्ष विशाल ग्लेशियर को देखकर चकित रह गई. कैप्टेन ने शिप को कुछ घड़ी के लिये रोक कर हमे इस दुर्लभ दृश्य को देखने का अवसर प्रदान किया था. बडे-बडे बर्फ के ढेर टूट-टूट कर हमारे सामने समुद्र के अथाह नीलाभ जल में समाते थे और फिर ऊपर आकर तैरने लगते थे. डेक पर उपस्थित सभी दर्शक विस्मित होकर देख रहे थे. जब शिप चलने लगा और ग्लेशियर आँखों से ओझल हो गया तब हमे अपनी परिस्थिति का ज्ञान हुआ. मैंने देखा कि बर्था समीप ही अपने स्टाल पर खडी थीं. मैंने उनके समीप जाकर अपना परिचय दिया और बताया कि मैं एक लेखिका हूँ और भारत से आई हूँ. आपके क्लैन्स के विषय मे जानने की उत्सुकता है. मैंने उनसे उनके बारे मे लिखने की अनुमति माँगी. बर्था ने मेरा बडी आत्मीयता से स्वागत किया एवँ समय के अभाव में भी हुना क्लैन्स तथा स्वयँ के विषय में यथासम्भव विस्तार से बताया.

बर्था फ्रैनुलोविच - बर्था फ्रैनुलोविच का जन्म हुना, अलास्का मे सन 1942 मे हुआ था. इस समय उनकी आयु 74 वर्ष है और अब सेवानिवृत होने वाली हैँ. उनकी माँ का नाम ग्रीनवाल्ड था. बर्था की नानी का स्वर्गवास उनकी माँ के जन्म के कुछ समय के बाद ही हो गया था. अतः उनकी माँ का पालन-पोषण अनाथालय मेँ हुआ था. उनकी माँ ग्रीनवाल्ड को इस बात का बड़ा दुख था कि घर मे पालन-पोषण न होने के कारण एवँ माँ की मृत्यु हो जाने के कारण वह अपनी संस्कृति से अनभिज्ञ रही. उन्होँने बर्था के पिता से विवाह करने के पूर्व यह शर्त रक्खी थी कि वह ग्रीनवाल्ड को उनके परिवार एवँ उनकी संस्कृति खोजने मेँ पूर्ण सहयोग करेँगे. इसके साथ ही उन्होँने यह शर्त भी रक्खी कि बच्चे होने पर उन्हेँ कभी छात्रावास मेँ नहीँ रक्खेँगे. बर्था के पिता ने यह वचन निभाया और वाशिँगटन मेँ घर लेकर बर्था को अपने साथ रखकर पढ़ाया. बर्था की दादी इटली की थीँ. उनका नाम एल्सी ग्रीनवाल्ड था. बर्था को उनकी दादी ने बहुत प्रभावित किया और अपनी संस्कृति के विषय मेँ जानकारी दी और अपनी संस्कृति के विकास के लिये कार्य करने की प्रेरणा दी. बर्था के परिवार की कहानी बहुत दुखद है. उनकी माँ तो अनाथ थीँ ही. बर्था की एक बडी बहिन थीँ जिनकी मृत्यु हो गई है. उनका एक भाई कार दुर्घटना मेँ चल बसा. उनका सबसे छोटा भाई सेना मेँ था. वह सन 1968 मेँ वियतनाम के युद्ध मेँ शहीद हो गया था.

बर्था की शिक्षा वाशिँगटन में हुई थी. उनके पति का नाम पाल फ्रैनुलोविच था. उनकी एक बेटी है. वह बहुत शिक्षित है और उसे चार भाषाओँ का ज्ञान है. बेटी का नाम टीना फ्रैनुलोविच मार्टिन है. बर्था के दामाद बहुत अच्छे व्यक्ति हैँ. उन लोगोँ की दो बेटियाँ हैँ. बडी बेटी 17 वर्ष की है तथा उसे भी तीन भाषाओँ का ज्ञान है. छोटी बेटी 15 वर्ष की है. वे सब बहुत परिश्रमी हैँ. बर्था पर अपनी दादी एल्सी ग्रीनवाल्ड का बहुत प्रभाव पडा है. हुना क्लैन मातृसत्तात्मक है और बर्था को अपनी संस्कृति के विषय मे सँरक्षण करने की प्रेरणा दादी से प्राप्त हुई थी. बर्था हालैंड अमेरिका की कम्पनी से जुड गईँ और इस कमपनी के छोटे-बड़े सभी जहाज़ोँ पर हुना लिंगिट की संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिये भाषण देती हैँ.

हुना टोटेम कार्पोरेशन की स्थापना- हुना संस्कृति के विषय मेँ शोध एवँ प्रचार हेतु सन 1977 मे हुना टोटेम कार्पोरेशन की स्थापना दो व्यक्तियोँ ने मिलकर की. मिस्टर मार्क इस संस्था के अध्यक्ष थे. डौन रोज़ेनबर्ग इस संस्था के वाइस प्रेज़ीडेंट थे जो पहले प्रिंसेज़ नामक शिप पर कार्य करते थे. नेशनल ज्योग्रेफिक, प्रिंसेज़, हालैंड अमेरिका की कम्पनी के अतिरिक्त अन्य संस्थाओँ के साथ जुड़ने के पश्चात हुना लिंगिट क्लैन के प्रचार-प्रसार के लिये बहुत काम होने लगा. 1980 मेँ मिस्टर मार्क एवँ डौन रोज़ेनबर्ग ने जूडी नामक एक युवा लड़की को इस संस्था से जोड़ा. उसने इस क्लैन की संस्कृति के प्रचार के लिये बहुत परिश्रम किया. जूडी ने अनेकोँ लोगोँ को इस संस्था से जोड़ा.

हुना लिंगिट [परिचय]-

काफी समय पहले से हुना लिंगिट के लोग ग्लेशियर बे के समीप दक्षिण-पूर्व अलास्का मे उत्तर मे याकूतात से लेकर दक्षिण मे केचिकान तक रहते आये हैँ. ग्लेशियर बे में प्रारम्भिक चार क्लैन हैँ -

1. कागवांतान [ईगल मोइटी.-- इसका प्रतीक चिन्ह भेडिया [क्लैन-क्रेस्ट वुल्फ] है.]

2. वूशकीतान [ईगल मोइटी–इस क्लैन का प्रतीक चिन्ह शार्क है].

3. चूकानीद–[ईगल मोइटी– पौरपौइज़ इसका क्लैन क्रेस्ट है.]

4. ताकदींतान -[रेवेन मोइटी – इसका किटीवेक क्लैन क्रेस्ट है.].

अधिकांश क्लैन दक्षिण पूर्व अलास्का को अपनी जन्मस्थली मानते हैँ. यहाँ के इतिहास और घटनाओँ का कहीँ पर लिखित विवरण नहीँ मिलता है. मुँहजबानी विवरणों एवँ वैज्ञानिक खोजों से यह सिद्ध हुआ है कि हुना लिंगिट के लोग अंतिम बड़े ग्लेशियर के आगे खिसकने के युग के बहुत पहले से ग्लेशियर बे मे रहते आये हैँ. यह स्थान उन लोगोँ का निवास स्थान था और ये लोग इसे टी-से-शू-ई यानि 'एज औफ द ग्लेशियल सिल्ट' नाम से कहते थे. यहाँ पर श्रुति परम्परा [कहने-सुनने की परम्परा] चलते रहने के कारण आज भी ये कहानियाँ प्रचलित हैँ कि 'बर्फ इतनी तेज़ी से आगे बढ़ा जितनी तेज कुत्ता भाग सके' और हुना लिंगिट को अपने स्थान से विस्थापित होना पड़ा. बाद मे जब बर्फ पिघलने लगी तब वे लोग आइसबर्ग से भरी धरती पर, जिसे वे हाक्ड-टू यानि 'अमँग द आइस' कहते थे, लौट आये. समय बीतने के साथ बर्फ घटने लगी और वह स्थान बे के रूप मे परिवर्तित हो गया. अब इसको सित-ई-ती-गे-ई यानि ग्लेशियर बे कहा जाता है.

ग्लेशियर के आगे बढ़ने से एवम आधुनिक सभ्यता के प्रसार से हुना लिंगिट सभ्यता को क्षति पहुंची है और उसकी संस्कृति का ह्रास हुआ है. इन परिवर्तनो के बावजूद हुना लिंगिट ने अपनी संस्कृति को संरक्षित रक्खा है और पुनर्जीवित किया है. अब लिंगिट भाषा स्कूलो मे पढ़ाई जा रही है. बहुत से व्यक्तियोँ एवम संस्थाओँ के द्वारा उसकी परम्पराओँ, गीतोँ व कहानियोँ को पोषित एवँ संरक्षित किया जा रहा है. यह समझा जा रहा था कि क्लैन के कुछ बहुमूल्य वस्त्र और सम्पत्ति आदि खो गये हैँ, उनको खोजकर यथास्थान पहुँचाया जा रहा है. ग्लेशियर बे के समीप और चारो ओर इनकी परम्परागत कृषि की कार्य प्रणालियोँ को पुनः स्थापित करने का प्रयत्न हो रहा है. उदाहरण के लिये--- सीगल के अंडों, बेरी आदि को खाना और स्प्रूस की जडों को एकत्रित कर टोकरी बुनना.

हुना लिंगिट में दो मोइटी हैँ–

1. ईगल मोइटी.

2. रेवन मोइटी.

यहाँ मातृसत्तात्मक समाज है. इसकी माताओँ द्वारा उनकी संतानों को जो परम्परायें ज्ञात होती हैँ उसके आधार पर यह निर्धारित होता है कि वे ईगल मोइटी के हैँ या रेवन मोइटी के हैँ. साधारणतः एक मोइटी के व्यक्ति दूसरी मोइटी के व्यक्ति से ही विवाह करते हैँ. प्रत्येक व्यक्ति की पहचान उसके परिवार के प्रतीक चिन्हों एवँ परम्पराओँ से सुनिश्चित होती है.

हूना लिंगिट के लोगोँ के लिये लकड़ी की नक्काशी और बुनाई की विशेष महत्ता है. सामान्य रूप से देखने पर ये वस्तुएँ अच्छी कलाकृतियाँ मात्र प्रतीत होती हैँ परंतु लिंगिट के लोगोँ के लिये इसमेँ महत्त्वपूर्ण जानकारी विद्यमान है. हस्तनिर्मित वस्तुएँ जैसे क्रेस्ट, टोटेम, रिगैलिया [पहनने के वस्त्र] आदि वस्तुओँ द्वारा उनके परिवार की वंशावली का परिचय प्राप्त होता है. इनमे इतिहास और महत्त्वपूर्ण घटनाओँ की स्मृति विद्यमान होती है.

हूना टिलिंगिट के लोगोँ का समुद्र से घनिष्ठ सम्बंध रहा है और नाविकोँ के रूप मेँ उनकी चिर स्थाई परम्परा रही है. दक्षिण पूर्वी अलास्का के लोग जल एवँ इसके स्रोतों से निकटता से जुड़े रहे हैँ. स्प्रूस के वृक्षोँ से छोटी डोँगी बनाई जाती थीँ जिनसे मछली पकड़ने और शिकार करने का कार्य किया जाता था. सीडर के वृक्षोँ से बडी डोँगियाँ जिनकी लम्बाई 60 फीट तक होती थी, बनाने की परम्परा थी. दक्षिण पूर्वी अलास्का की धरती पर भोजन और प्राकृतिक संसाधनोँ की प्रचुरता है. जाड़े के महीनोँ मेँ लोगोँ को जीवित रखने के लिये वहाँ की धरती पर ग्रीष्म ऋतु मेँ कृषि की जाती है. अनाज को व अन्य खाद्य पदार्थोँ को सँजो कर सुरक्षित रक्खा जाता है. सामन मछली, हलीबट, सील, बकरी और हिरन का माँस सुखाकर रक्खा जाता है. पौधे, बेरी और सी वीड एकत्रित करके रक्खी जाती है. ये परम्परागत खाद्य पदार्थ आज भी उतने ही लोकप्रिय एवँ महत्त्वपूर्ण हैँ.

लिंगिट भाषा- हूना लिंगिट की भाषा की विशेषता उसकी वर्णनात्मकता और अलंकरण की शक्ति है. जगह का नाम कभी- कभी उल्लेखनीय चरित्र का वर्णन करते हैँ. ऐतिहासिक स्थान, कार्यवाहियाँ, घटनायेँ एवँ इतिहास श्रुति परम्परा द्वारा याद रक्खे जाते हैँ. उनकी भाषा कालचक्र व्यतीत होने पर भी जीवित रही है क्योँकि हर आयु के लोग अपने पूर्वजोँ की भाषा को अपने बडोँ की सहायता एवँ स्थानीय विद्यालयोँ और विश्वविद्यालयोँ के माध्यम से सीखते तथा बोलते थे. बर्था ने बताया कि यह कहा जाता है कि अलास्का की धरती हूना लिंगिट की भाषा सुनने को आतुर रहती है और तुम वहाँ जाओ तो वहाँ पर बोलने के लिये कुछ महत्त्वपूर्ण वाक्य, सीख कर जाओ.

ग्लेशियर बे– सित' ईती गीय.

हाउ आर यू– वा सा इयाते.

आय एम गुड, आय एम फाइन,-- ज़ैत या की.

माय फ्रेंड– आक्स ज़ूनी.

थैंक यू– गुनालचीश.

थैंक यू के उत्तर में – आ या याकी.

यस– लित.

आय विल सी यू अगेन या अंटिल वी मीट अगेन. --- ज़ू यी एक्वास्तीन

रावेन-- ईल.

ईगल-- शाक.

दिस इज़ फौर आर चिल्ड्रेन फौर एवर.--- हा-यात्ज़-जीज़-अया.

आज हुना लिंगिट आदिवासी लोग आधुनिक जीवन व्यतीत कर रहे हैं परंतु इसके साथ ही अपनी जन्मभूमि से व इसके संसाधनों से सम्पर्क बनाये हुए हैं और अपनी संस्कृति एवँ परम्पराओं को सुरक्षित रक्खे हुए हैं. अभी इस क्षेत्र मे बहुत कार्य होना बाकी है परंतु बहुत से व्यक्ति और संस्थायें इस दिशा मे प्रयत्नशील है. अतः यह आशा जागती है कि हुना लिंगिट और उनकी संस्कृति जीवित रहेगी.

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें